'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ६० } वाराणसी, गुरुवार, २१ मई, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन बलाचौरा (पंजाब) ७-५-'५९

विश्वास की शक्ति के बिना न व्यक्ति टिकेगा, न समाज टिकेगा !

"विश्वास इस संसार का सबसे अद्‌भुत जादू है। विश्वास पर ही यह सारा संसार खड़ा है। यदि विश्वास की शक्ति न रहे तो मानव जाति एक दूसरे से लड़-लड़ करके समाप्त हो जायगी। एक चोर को भी अपने साथी चोर पर विश्वास करना पड़ता है। यदि हम इस विश्वास पर विश्वास करके उसकी शक्ति को पहचान सकें और तदनुसार बरत सकें तो दुनिया के झगड़े मिटने में देर नहीं लगेगी। आज की दुनिया के झगड़ों का सबसे बड़ा कारण अविश्वास है। हमें यही अविश्वास मिटाना है।"

मेरे पास मास्टर तारासिंह, ज्ञानी करतारसिंह, पटियाला महाराज, आर्यसमाजी भाई आदि भिन्न-भिन्न विचारों के लोग आते हैं। वे जो कुछ कहते हैं, मैं उन पर विश्वास रखता हूँ। क्या वे सारे मुझे ठगनेवाले हैं ? नहीं, वे मुझे ठग नहीं सकते। जो सामनेवाले पर विश्वास रखता है, वह उसके हृदय में प्रवेश पाता है। फिर तो सामनेवाले के लिए भी यह लाजमी हो जाता है कि वह ठीक-ठीक बातें बता दे। मैं किसी पर विश्वास रखता हूँ तो उसके लिए भी मेरे पर विश्वास करना लाजिमी हो जाता है।

परख से विश्वास बेहतर है

यहाँ पर मैंने चन्द व्यक्तियों का एक सर्वोदय-मंडल बना लिया है। वे व्यक्ति दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हैं, ऐसी बात नहीं। उनमें दोष हो सकते हैं। लेकिन मैंने विश्वास से यह मंडल बनाया है। आप भी उन लोगों पर विश्वास रखिये। अगर मैं सर्वोदय-मंडल में परख कर आदमियों को सम्मिलित करता तो आप भी उन्हें परखते। लेकिन मैंने उन पर विश्वास रखा है। आप भी उन पर विश्वास रखिये। आपके विश्वास के बावजूद वे अगर निकम्मे साबित हुए तो बाबा डूबेगा, आप डूबेंगे और वे भी डूबेंगे। डूबना है तो साथ डूबेंगे और तैरना हो तो साथ तैरेंगे। इसी में आनन्द है। आप विश्वास रखेंगे तो वे निश्चय ही डूबने जैसा काम नहीं करेंगे। विश्वास से असज्जन सज्जन बन जाते हैं।

हम एक पत्थर लेते हैं और मंत्र बोलकर उसे भगवान बना देते हैं। भगवान ने हमें बनाया, पर हम भावना से अभिषिक्त कर पत्थर को ही भगवान बना देते हैं। उसी तरह से हमने दस पत्थर इकट्ठे किये हैं।

बच्चा माँ पर विश्वास रखता है, इसलिए माँ बच्चे का खून नहीं कर सकती। मैंने इन लोगों पर विश्वास रखा है, इस लिए ये भी गलत काम नहीं कर सकते। अगर कभी इनसे कोई गलत काम हो गया तो ये ही फिरसे जाहिर करेंगे कि 'हमने अमुक गलती की है, आप हमें क्षमा कीजिये।' जब तक यह जाहिर नहीं करते, तब तक यह मानना चाहिए कि ये ठीक काम करते हैं। ये लोग सर्वोदय-पात्र, भूदान, संपत्तिदान आदि का काम करेंगे।

बालक की तरह सरल भाव से माँगो

कल एक भाई ने हमसे पूछा कि कोई भूदान न देकर अगर संपत्तिदान दे तो क्या उसे लेना चाहिए ? मैंने जवाब दिया कि भूदान आदि टैक्स नहीं हैं। जो प्रेम से दे, वही ले लेना चाहिए। उसी के जरिये हमें उसके आँगन में प्रवेश मिल जाता है। फिर धीरे-धीरे उसके रसोईघर में प्रवेश मिलने ही वाला है। जब हम उसके बच्चे होकर माँगेंगे, तब वह छठा हिस्सा दिये बिना नहीं रहेगा। बच्चा माँगता है तो क्या माँ इन्कार कर सकती है ? वैसे ही आप जिनके पास माँगने के लिए जाते हैं, उसके पास बच्चा बनकर जाते हैं या दुश्मन बन कर, यह आपको पहले ही सोचना चाहिए। अगर आप सामनेवाले से कहेंगे कि अब वक्त आ गया है, अब दान दे दो। नहीं तो कम्युनिस्ट आयेंगे और आपकी बरबादी हो जायगी। तो फिर वह आपको कैसे देगा ? बच्चा बन कर प्रेम से माँगेंगे तो आपको जरूर मिलेगा। बालक की तरह सरल भाव से जाओ और माँगो।

विश्वास इस जमाने की शक्ति है। लोग मेरे शब्दों पर विश्वास रखते हैं। नहीं तो उनके पास क्या सबूत है कि मैं झूठ नहीं बोलता। परन्तु लोगों का मुझ पर विश्वास है कि मैं झूठ नहीं बोलता। और मैं भी उन पर विश्वास रखता हूँ। विश्वास ही मेरा जादू है। इसकी शक्ति महान है। ◆◆◆

(गतांक से समाप्त)

सरकारी कर्मचारियों से पटियाला (पंजाब) २५-४-'५९

लोकतन्त्र की सफलता के लिए पक्षमुक्त समाज आवश्यक

सरकारी अधिकारियों के सामने बोलने का मौका बहुत दफा मिला है। परन्तु अब तक इतनी तादाद में सरकारी कर्मचारियों को मैंने इकट्ठा नहीं देखा। (करीब चार-पाँच हजार की तादाद में कर्मचारी आये थे।) आप सब भाई यहाँ प्रेम से हमारी बात सुनने के लिए आये हैं, यह देखकर हमें बड़ी खुशी हुई।

अनुत्पादक वर्ग

मैंने बहुत दफा वर्तमान भारत की हालत का जिक्र करते हुए कहा है कि हिंदुस्तान में करीब ५५ लाख नौकर हैं और हमारे देश के लिए इसकी आवश्यकता नहीं है। इन सब सरकारी कर्मचारियों पर सरकार का दो सौ करोड़ रुपयों का खर्च होता है। तीन सौ करोड़ रुपया मिलीटरी पर खर्च होता है। यह एक बहुत बडा बोझ हमारे देश पर है। इसका मतलब यह हुआ कि सात करोड़ परिवार की सेवा के लिए ५५ लाख नौकर रखे जायँ और इतना भारी शूद्रवर्ग तैयार हो जाय। पुरानी परिभाषा में मैं बोल रहा हूँ। ५५ लाख नौकर याने ५५ लाख परिवार। १३ परिवार के लिए एक परिवार सेवा करनेवाला हो गया। इससे एक बड़ा भारी मिडिल क्लास तैयार हो गया है, जो कि बेकार नहीं है, कुछ-न-कुछ काम कर रहा है, परन्तु उत्पादन नहीं करता है।

अब हमारे देश को स्वराज्य प्राप्त हो गया है। इस समय यह नौकर-वर्ग प्रामाणिकता से सेवा करता है तो यह देश-सेवक होने का दावा कर सकता है। स्वराज्य-प्राप्ति के पहले की बात अलग थी। ८० साल पहले अंग्रेजी में बड़े-बड़े अच्छे-अच्छे लोग सरकारी नौकरी में थे। दादाभाई नौरोजी, रानडे इत्यादि हजारों लोगों ने नौकरी के जरिये देश की सेवा भी की। उस समय हिन्दुस्तान की सरकार नहीं थी, परदेशी सरकार थी, फिर भी हमारे विद्वान लोग उसमें गये थे और उन्होंने अच्छी खिदमत की थी, ऐसा मानना होगा।

कांग्रेस का यह इतिहास

जिन्होंने कांग्रेस की स्थापना की, उन्होंने यह माना था कि अंग्रेजों की हुकूमत अच्छी है, उसमें नौकरी करना अच्छा है। देश के दुःखों को सरकार के सामने रखने के लिए ही कांग्रेस की स्थापना हुई थी। कांग्रेसवालों को फिर धीरे-धीरे यह अनुभव आया कि जब तक हम स्वराज्य के लिए आवाज नहीं निकालते हैं, तब तक हमारे मसले हल नहीं होंगे। दादाभाई नौरोजी वगैरह सरकार के सामने देश के दुःख रखते थे, परन्तु उसका कुछ हल नहीं निकलता था। इसलिए स्वराज्य-प्राप्ति का प्रस्ताव कांग्रेस ने कांग्रेस बनने के २० साल बाद पास किया, तब भी कांग्रेस में कुछ लोग ऐसा कहते थे कि सरकार के सामने दुःख रखने का काम जारी रखना चाहिए। कुछ लोगों का कहना यह था कि स्वराज्य के लिए प्रयत्न करना होगा। तब धीरे-धीरे भावना बनी। जनता का जोश बढ़ता गया। अन्याय और दुःख-निवारण के लिए जोश पैदा हुआ। वह निश्चय दिन-ब-दिन प्रबल होता गया। जनता भी समझने लगी कि स्वराज्य-प्राप्ति के बिना सिद्धि नहीं मिलेगी। फिर आये लोकमान्य तिलक। उन्होंने कहा कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और वह हम प्राप्त करेंगे। बाद में गांधीजी आये। उन्होंने बिल्कुल क्रांतिकारी कार्यक्रम देश के सामने रखा। उन्होंने कहा कि स्वराज्य चाहते हो तो असहकार—नान-को-आपरेशन—ही उसका रूप हो सकता है। सब सरकारी नौकरों को नौकरी छोड़नी चाहिए, वकीलों को वकालत छोड़नी चाहिए और यह उनका प्रोग्राम कांग्रेस ने मान्य किया। जिस दिन वह प्रस्ताव मान्य हुआ, उस दिन सरकारी कर्मचारियों के सामने दो ही मार्ग बच गये। या तो वे नौकरी छोड़ें या देशद्रोही बनें। राष्ट्र की ओर से आवाज निकली भी—छोड़ो नौकरी ! उस समय सभी नौकरी छोड़ देते तो एक ही दिन में स्वराज्य मिल जाता। परन्तु कई लोग मन-ही-मन सोचने लगे कि अगर हम नौकरी छोड़ दें, दूसरे न छोड़ें तो हमारा नुकसान हो जायगा। इसी कारण से बहुत लोगों ने नौकरी नहीं छोड़ी। अगर कुल नौकरों ने नौकरी छोड़ी होती तो एक दिन में स्वराज्य मिला होता। अंग्रेजों की सरकार नौकरों के भरोसे काम करती थी, इसलिए अगर सब नौकरी छोड़ देते तो उनका राज्य एक क्षण भी कायम नहीं रह सकता था।

देशभक्त साबित हों !

अब स्वराज्य प्राप्त हो गया है। नान को-आपरेशन के प्रस्ताव के बाद जो नौकर देशद्रोही साबित हुए थे, वे सब के सब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद देश-सेवक साबित हुए। यह एक चमत्कार हुआ ! मैं मानता हूँ कि आज जो लोग रेल्वे आदि में काम करते हैं, वे देश-सेवा का काम कर सकते हैं। अगर वे अपने काम में पूरी अक्ल लगाते हैं तो देश के उत्तम खिदमतगार हो सकते हैं।

आप लोगों को मैं राष्ट्र का बोझ नहीं मानता हूँ। अपने देश के लिए हम लोगों को कुछ काम करना ही चाहिए। आप सेवा-प्रेमी हैं। परीक्षा दिये हुए अच्छे दिमागवाले लोग हैं, यह देश का भाग्य है। देश को आपकी सेवा की जरूरत है। मैं आपको इस निगाह से देखता हूँ तो आप मेरे हो जाते हैं और मैं आपका हो जाता हूँ। मैंने बहुत दफा कहा है कि हिन्दुस्तान की तरक्की तब होगी, जब हम पक्षमुक्त होंगे। आज जो तरह-तरह के झगड़े पैदा होते हैं, वे नहीं होंगे। इसलिए मैं पक्षमुक्त समाज चाहता हूँ और उसी की स्थापना का निश्चय लिए घूम रहा हूँ।

लोकतंत्र का भारतीय नमूना बनाएँ

हमने पश्चिम से जो डेमाक्रेसी ली है, वह वैसे ही ले ली है। उसमें फर्क करने की जरूरत है। इंग्लैंड में एक ही जबान है—अंग्रेजी और यहाँ चौदह जबानें हैं। वहाँ एक ही ईसाई धर्म है और यहाँ पाँच-छह धर्म हैं। वहाँ जाति-भेद बिल्कुल नहीं है और यहाँ वह मौजूद है। यहाँ अनेक जातियाँ हैं। कितनी हैं यह पूछेंगे तो मैं कहूँगा—एक पेड़ पर जितने पत्ते होते हैं, उतनी हैं। इंग्लैंड के ९० फी सदी लोग शिक्षित हैं और हिन्दुस्तान के १८-२० फी सदी लोग शिक्षित हैं। इंग्लैण्ड सब प्रकार से सम्पन्न देश और हिन्दुस्तान सब प्रकार से विपन्न है। इंग्लैण्ड में डेमाक्रेसी ४०० साल से विकसित होती आयी है। हिन्दुस्तान ने उसे अभी-अभी अपनाया है। इस तरह इंग्लैण्ड के समाज में और हिन्दुस्तान के समाज में बहुत फर्क है। उसके लिए हमारा समाज अनुकूल करना होगा। डेमाक्रेसी बहुत अच्छी चीज है, लेकिन उसका हिन्दी नमूना पेश करना है। यहाँ की आबोहवा के लायक उसे बनाना होगा। आज वह न होने के कारण पार्टी-पार्टी में द्वेष फैला है और झगड़े होते हैं। एक ही पार्टी

में अलग-अलग ग्रूप्स होते हैं और उनमें द्वेष-भावना होती है और उसका असर सरकार के सारे काम पर होता है। एक पार्टी का नेता बोलता है तो दूसरी पार्टी के नेता की निंदा करता है। दूसरी पार्टी का नेता उसकी निंदा करता है। यह उसे गालियाँ देता है, वह उसे गालियाँ देता है। जनता दोनों की गालियाँ सुनती है और दोनों को गाली देती है, दोनों की निंदा करती है।

आज जनता बिलकुल निष्क्रिय बन गयी है। बहुत वर्षों की गुलामी के कारण बहुत सुस्त हो गयी है! किसी के प्रति आदर जैसी कोई चीज ही नहीं रही है। लोग जड़ बन गये हैं। अब यह सर्वोदय का नसीब है कि सभी पक्षों के लोग एक प्लेटफार्म पर आते हैं। देश में अभी ऐसा कोई प्लेटफार्म नहीं है, जहाँ सब पार्टी के लोग आ सकें, सर्वोदय के कारण अब वैसा प्लेटफार्म तैयार हुआ है।

पक्षमुक्त समाज

डेमाक्रेसी में कई अच्छी बातें हैं, परन्तु एक पक्षमुक्त समाज होगा तो उसका नैतिक असर सरकार पर होगा तथा दूसरे पक्षों पर भी होगा। मेरी कोशिश है कि एक ऐसा पक्षमुक्त समाज बनाया जाय, जिसका समाज पर असर हो और सभी पक्षों पर भी हो। कांग्रेस, सोशलिस्ट, जनसंघ, कम्युनिस्ट, द्रविड़कड़घम् आदि तरह-तरह के पक्ष हैं। सभी एक-दूसरे के लिए मन में द्वेष-भावना रखते हैं। कुछ लोग इस पक्ष में हैं, कुछ उस पक्ष में। कुछ लोग मुझे भी पूछते हैं कि सर्वोदय-समाज में कौन आयेगा? मैं कहता हूँ कि भाई! पक्षमुक्त समाज बहुत बड़ा समाज है। नीति में तो बड़ा है ही, लेकिन संख्या में भी बड़ा है। असंख्य लोग पक्षमुक्त समाज में शामिल हैं। कौन शामिल नहीं है? आप जो सारे कर्मचारी मेरे सामने बैठे हैं, वे पक्षमुक्त ही हैं। सरकार की तरफ से आप पर काम सौंपा गया है और आपका कर्तव्य माना जाता है कि हरएक की सेवा आप इन्सान के नाते करें। यह आपकी जिम्मेवारी है। आप मेरे नौकर हैं, मेरा काम करेंगे और सरकार की तनख्वाह पायेंगे। ऐसा नहीं होता तो आपको मेरा भाषण सुनने के लिए नहीं बुलाया जाता। सरकार चाहती है कि आप मेरा काम करें और सरकार का खायें। इस प्रकार आप सर्वोदय-समाज के—पक्षमुक्त समाज के—सदस्य हो गये।

पक्षमुक्त कौन-कौन बनें, उनकी योग्यता क्या हो? जो भी भला काम करना चाहें, वे पक्षमुक्त हो जायँ। आपके राष्ट्रपति मूल में चाहे किसी भी पार्टी के हों, पक्षमुक्त होने चाहिए। स्पीकर, कोर्ट के न्यायाधीश, मिलिटरी, सिविल सर्वेन्ट्स आदि क्या पक्षमुक्त नहीं होने चाहिए? विद्यार्थी किसी पार्टी में नहीं जा सकते, नहीं जाने चाहिए। शिक्षकों को पक्षमुक्त रहना चाहिए। पक्षमुक्त कौन और पक्षयुक्त कौन? जो पंखवाले होंगे—दो पंखों से उड़नेवाले पक्षी—वे पक्षयुक्त होंगे। आपको इस पेड़ से उस पेड़ पर उड़ना है, गाँव-गाँव में जाना है, सेवा करनी है। अभी सीतामढ़ी में दंगा हुआ तो तत्काल पुलिस भेजी गयी। वहाँ ठंडे दिमागवाले लोग ही कामयाब हो सकते थे। लोगों का दिमाग भी गरम हो और आप भी गरम दिमागवाले बनो तो आग कैसे बुझेगी? आग में केरोसीन डाला जाय तो क्या होगा? आप तो आग में ठण्डा पानी डालनेवाले लोग हैं। मैं चाहता हूँ कि आप सारे पक्षमुक्त समाज के नाते सबकी सेवा में लगें। कभी भी न्याय को भूले नहीं। कभी-कभी अकारण ही सरकारी नौकरों का दबाव डाला जाता है, वैसा नहीं होना चाहिए। मैं कहता हूँ कि आप हम पर दबाव नहीं डालना चाहते हैं। दबाव डालना, यह आपकी नौकरी की शर्त के खिलाफ है।

विश्वास पाने का तरीका

स्वराज्य के बाद हमारे हाथ में खेत आया है। बारिश होगी और हम कुछ काम नहीं करेंगे तो खेत में घास उगेगा। इसलिए मेहनत-मशक्कत करेंगे तो फसल आयेगी। मेहनत करके देश का मुख उज्ज्वल करना होगा। वह आपकी मेहनत से ही होगा। इसकी आप पर जिम्मेवारी है। आप जिम्मेवारी लेकर लोगों के पास, लोगों के होकर, लोगों के तरीके से, लोगों के जरिये सेवा करेंगे तो लोगों को यह विश्वास हो जायगा कि आप उनके मित्र हैं और खिदमतगार हैं। इस तरह लोगों में विश्वास पैदा होगा, तब काम होगा। इसके लिए आपको नम्रता से और प्रेम से लोगों के पास पहुँचना होगा। लन्दन की पुलिस पर वहाँ का नागरिक तथा बच्चा-बच्चा विश्वास रखता है। आप स्वराज्य की सरकार के सेवक हैं। लोगों का दिल आपके सामने खुलना चाहिए। आपको प्रेम से और नम्रता से उनके साथ पेश आना चाहिए।

आपकी जो कमाई होती है, वह पूरी नहीं है, आपको ज्यादा तनख्वाह नहीं मिलती है, लेकिन साधारण स्टैंडर्ड से आपका स्टैंडर्ड ऊँचा है, इसलिए आप पर एक जिम्मेवारी आती है कि आप अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा समाज को दें। लोगों के काम के लिए, सर्वोदय के काम के लिए थोड़ा सा भगवान को समर्पण करके फिर खाना चाहिए। हमें ज्यादा चिन्ता न करनी पड़े, बच्चों की चिन्ता न करनी पड़े और निश्चिन्त होकर सेवा कर सकें, इसलिए हमें तनख्वाह दी जाती है, ऐसा आपको विचार करना चाहिए। मैं यह मानता हूँ कि बहुत ज्यादा तो आपको नहीं मिलता होगा, परन्तु साधारण जनता के जीवन-मान से आपका जीवन-मान ज्यादा ऊँचा है। इसलिए प्रतिमास प्रेम के तौर पर एक टोकन समझ कर आप कुछ दिया करें।

श्रम दीवारों को तोड़ता है

हिन्दुस्तान का यह एक दुर्दैव है कि यहाँ की कुछ जमातें हाथों से काम करने में इज्जत नहीं मानती हैं। वे लाचार होकर काम करती हैं। ब्राह्मण को वेदाध्ययन करना चाहिए, भंगी को भङ्गीकाम करना चाहिए, वैश्य को व्यापार करना चाहिए, इस तरह हरएक का अलग-अलग काम माना गया है। परन्तु फिजिकल लेबर करना घृणास्पद है, ऐसा माना गया और यह यहीं की बदी है, कमी है। अंग्रेजों की तालीम ने नौकर-वर्ग बढ़ाया। मेहनत-मशक्कत की बात नहीं, काम करने की आदत नहीं और शरीर-परिश्रम को हीन माने, ऐसा एक वर्ग खड़ा हुआ है। आज भी आप देखते हैं स्कूल में मास्टर साहब झाड़ू नहीं लगा सकते हैं, विद्यार्थी भी नहीं लगाते हैं। उस काम के लिए नौकर रखा जाता है। वह नौकर भी दस-दस, बीस-बीस साल विद्वानों की संगति में रहता है, लेकिन स्कूल की दीवार की तरह वैसा का वैसा ही रह जाता है। उसे ज्ञान का बूंद भी नहीं मिलता, क्योंकि हमने एक ऊँची जमात बनायी है। आपको यह सब देखकर एक घंटा-सवा घंटा शरीर-परिश्रम करना चाहिए और कुछ-न-कुछ काम रोज करना चाहिए। ताकि ऊँच-नीच की यह दीवार टूट जाय।

बहनों को अवसर दीजिए

इन दिनों मैंने एक सादा लेकिन ताकतवाला काम शुरू किया है। सर्वोदय-पात्र! हर घर में शांति-सेना के लिए एक वोट के

तौर पर सर्वोदय-पात्र रखा जाय और उसमें रोज अपने बच्चे के हाथ से एक मुट्ठी अनाज डाला जाय। यह काम आपकी पत्नी कर सकती है। आप तो बँधे हुए देश-सेवक हैं। मुक्त देश-सेवक भी होने चाहिए। उसके लिए आपके घर में जो बहनें हैं, वे काम कर सकती हैं। आपकी सेवा तो देश को मिलेगी ही, लेकिन बहनों की भी सेवा मिलनी चाहिए। आप हमारी तनख्वाह पाते हैं, बहनें नहीं पातीं, लेकिन आपकी तरह उनकी सेवा भी समाज को मिलनी चाहिए। इसलिए सर्वोदय-पात्र का काम आपकी माता, कन्या, बहनें, तथा पत्नी करे तो हिन्दुस्तान का बेड़ा पार है। बहनें उत्तम तरह से सेवा कर सकती हैं। स्त्री एक प्रेम की शक्ति है, इसलिए आप इस काम में बहनों को आगे आने दीजिये।

◆◆◆

चुरू के शिक्षकों से

चुरू ता० २२-३-'५९

मन से ऊपर उठकर विश्व-मानुष बनने से ही शिक्षक समाज का नेतृत्व कर सकेगा

छोटी सी अनौपचारिक सभा हो तो बातचीत अच्छी तरह से हो सकती है। शंका उपस्थित होती है तो उस पर भी चर्चा हो सकती है और हृदय भी खुल सकता है। जहाँ शांति की जगह होती है, वहाँ ज्ञान-चर्चा अच्छी हो सकती है। हम ऐसा ही करते हैं। रोज आठ-दस मील चलते हैं। कभी-कभी सात मील भी चलते हैं। जिस दिन कम चलना होता है, उस दिन आधा घंटा किसी टेकरी या टीले पर अथवा किसी खेत या मैदान में जाकर बैठ जाते हैं। वहाँ बैठकर भगवान का ध्यान करते हैं। सुनने के लिए दस-बीस लोग होते हैं, उन में हमारा हृदय जितना खुलता है, उतना सार्वजनिक सभा को छोड़कर और सभा में नहीं खुलता। सार्वजनिक सभा नारायणी सभा होती है। उदयपुर, चित्तौड़ और सीकर में जो सभाएँ हुई, उनमें हमने नारायण के दर्शन पाये और उससे एक अद्भुत स्फूर्ति मिली।

एकान्त के बिना?

आश्रम में हम तीस साल बैठे। उसमें हमने यही अनुभव किया था। अभी गोकुल भाई ने बताया कि विनोबा एक जमाने में बहुत एकान्तप्रिय था। तब भी हमारे साथ पाँच-पच्चीस लोग रहते ही थे। सबका सामूहिक जीवन था। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, लोक-जीवन का, व्यक्ति-जीवन की, शास्त्र की, कला की उद्योग की आदि नाना प्रकार की चर्चाएँ होती थीं। चर्चाएँ कर्म के साथ चलती थीं। कभी अनाज साफ करते हुए, कभी बरतन माँजते हुए, कभी खेती करते हुए और कभी दूसरे उद्योग करते हुए। आजकल यह ज्ञान-चर्चा जहाँ रास्ते में हम एकान्त पाकर बैठ जाते हैं, वहाँ होती है। दस-बीस लोगों में जो हार्दिक चर्चा होती है, उसका आनन्द निराला ही मिलता है। हमारा यह सिलसिला उड़ीसा और महाराष्ट्र में भी चलता था। उड़ीसा में गोपबन्धु, रमादेवी जैसे बड़े लोग साथ रहते थे और छोटे लोग भी। वहाँ हमने उड़िया भागवत की चर्चा की थी।

ज्ञानचर्चा एकान्त में ही होती है। एकान्त के बिना ज्ञान नहीं होता। शास्त्र में कहा है:—

'गव्हरे च गिरीणां, संगथे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायत।'

पहाड़ों के सान्निध्य में नदी के किनारे ब्राह्मण का जन्म हुआ। ब्राह्मण याने ज्ञानी का जन्म हुआ। ब्राह्मण पहाड़ों में नदी के तट पर ज्ञान-ध्यान करते थे। इसका भावार्थ इतना ही है कि एकान्त में ज्ञान की उपलब्धि हो सकती है। यदि हमने एकान्त-जीवन नहीं बिताया होता तो आज जो ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है, वह न हुआ होता।

एक एकान्त वह होता है, जिसमें लोग उदासीन होते हैं। आदिवासी लोग जंगल में उदासीन पड़े होते हैं। जीवन क्या है? बाहर क्या चल रहा है? इत्यादि बातों के साथ उनका कोई ताल्लुक नहीं रहता। दूसरा एकान्त वह होता है, जिसमें सारा विश्व समा जाता है। बड़े-बड़े राजाओं को अपनी समस्या का हल नहीं मिलता था तो एकान्त में वास करनेवाले ऋषियों के पास जाकर रहते थे और ऋषि उनके सवाल को हल करते थे। मैंने उससे उल्टा कार्यक्रम शुरू किया है। आज मैं गाँव-गाँव और घर-घर में अर्थात् विश्व में घूम रहा हूँ। एकान्त में रहना मैंने छोड़ दिया है। जब मैं एकान्त में था, तब पूरे विश्व का चिन्तन मेरे मस्तिष्क में चलता था।

मेरी कसौटी

अब मैं विश्व में घूम रहा हूँ तो मेरा सारा जीवन जनता के सामने रहता है। यहाँ तक कि मेरा खाना, पीना, सोना भी पचासों लोग देखते हैं। खुली किताब की तरह मैं जन-देवता के सामने रहता हूँ। खाता हूँ, तब कभी-कभी लोगों से बातें करता रहता हूँ। केवल जब मैं सो जाता हूँ, तब लोगों की नहीं चलती है। नींद के अलावा और कोई ऐसा क्षण नहीं है, जो जनता का न होकर केवल मेरा हो। इस तरह विश्व में घूमते हुए भी मैं अपनी कसौटी करता हूँ। वह कसौटी यही है कि मुझे नींद आयी या नहीं? नींद के समय चित्त में चिन्ता तो नहीं हो रही है? इस तरह चिन्ता में चित्त घूमने लगा तो मैं अपने को नापास समझूँगा। यदि चित्त स्थिर रहा तो मैं अपने आप को पास समझूँगा। मुझे बहुत ही शान्त और निर्विघ्न निद्रा आती है। मुश्किल से दो मिनट नींद आने में लगते होंगे। मन में किसी तरह का बोझ, दबाव या चिन्ता नहीं रहती। संपूर्ण एकान्त का अनुभव विश्व में निरंतर घूमते हुए भी करता हूँ। इसी तरह जब आश्रम में एकान्त जीवन व्यतीत करता था, तब परिपूर्ण विश्व के साथ एकरूपता का अनुभव किया करता था।

तटस्थ और अलग रहना होगा

राजनीति में मेरे अनेक साथी थे। मैं तटस्थ और साक्षीरूप होकर उन साथियों का खेल देखता था। मुझे राजनीति ने कभी खींचा नहीं। इसीलिए मैं दूर रहकर राजनीति की बुराइयों को अधिक बारीकी से और तटस्थता से देख सकता था। उन गलतियों को दूर करने के लिए बराबर कहता भी रहता था। यदि मैं स्वयं उस कीचड़ में फंस जाता तो तटस्थ दर्शक का काम करने में असफल रहता। मेरे मित्रों को इसका बहुत आश्चर्य होता था। क्योंकि वे मित्र मुझ से चर्चा करने के लिए आते थे तो मैं उनको मौलिक सुझाव देता था। सुझाव मेरी तटस्थता के बदौलत ही अन्दर से सूझते थे।

आप सब शिक्षक लोग हैं। देश के निर्माण में आप लोगों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसलिए मैं आप लोगों को यह सलाह देना चाहता हूँ कि जीवन में एकान्त साधना की आदत डालिये। एकान्त का भावार्थ इतना ही है कि सारी दुनिया से तटस्थ

होकर पक्षों में अथवा अन्य सांसारिक प्रवृत्तियों में आसक्त न होकर विश्व का दर्शन करना। कहाँ क्या चल रहा है, क्या चलना चाहिए और उसमें हमारी क्या मदद हो सकती है, इसका विश्लेषण करना। जैसे थर्मामीटर में बुखार नहीं होता, इसीलिए वह दूसरे का बुखार नाप सकता है। यदि वह स्वयं बुखार के दलदल में फँस जाय तो दूसरों का बुखार नापने में असफल साबित होगा। शिक्षकों को थर्मामीटर का काम करना है। वे यदि संसार के चक्कर में, राजनीति के दलदल में और छोटे-मोटे दूसरे झगड़ों में फँस जायेंगे तो समाज और विश्व का निर्माण करने की उन पर जो जिम्मेदारी है, उसे वे नहीं निभा सकेंगे।

मैं एक गंभीर बात आप लोगों से कहने जा रहा हूँ। इस दुनिया से अलग होना अर्थात् इस शरीर से और मन से भी अलग होना होगा। जो शरीर और मन में आसक्त रहेगा, वह दुनिया की सेवा नहीं कर सकेगा। यह बहुत सूक्ष्म चिन्तन की बात है। पर इसके बिना कोई रास्ता नहीं है। यदि हम में शरीर से, मन से, समाज से और सारे संसार से अलग रहकर जीने की क्षमता आ सकती है तो हम एकान्त में जीने की साधना कर सकेंगे। भगवान ने इसे ज्ञान के लक्षणों में बताया है। ज्ञान कभी संसार में बैठकर नहीं मिलेगा। संसार से दूर, मन की ऊँचाई-नीचाई से दूर, शरीर की आसक्तियों से दूर, तटस्थ भाव से देखेंगे, तभी ज्ञान की महान साधना करने में सफल हो सकेंगे। अगर रातभर सारे संसार के विचार दिमाग में भीड़ करेंगे तो चिन्तन सही रास्ते पर नहीं चल सकेगा।

विद्यार्थी राजनीति में भाग न लें

बार-बार सवाल उठता है कि विद्यार्थियों को राजनीति में हिस्सा लेना चाहिए या नहीं। अक्सर यह माना जाता है कि विद्यार्थियों को राजनीति से अलग रहना चाहिए, ताकि उनके दिमाग बचे रह सकें। उन्हें ज्ञान हासिल करना है। इसलिए एक बार वे ज्ञान प्राप्त कर लें, बाद में उनको जो उचित लगे, वह करें। मैं इस बात से सहमत हूँ। वास्तव में आज राजनीति का अर्थ है पक्षों के दल-दल में फँसना। यदि यही राजनीति है तो मैं साफ-साफ जाहिर करना चाहता हूँ कि विद्यार्थियों को इस पचड़े में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहिए। ये पार्टियों के पचड़े बहुत तुच्छ हैं। विद्यार्थियों के सामने तो बहुत बड़ा विषय है। एक विशाल क्षेत्र है, लोकनीति को सफल करने का, विश्व-नागरिक अथवा विश्व-मानव बनने का। समाज में विश्व का कारोबार कर सकनेवाले राजनीतिज्ञ रहेंगे, लेकिन कूटनीतिज्ञ और पक्षों के दल-दल में फंसे रहनेवाले नहीं। इस प्रकार का चिन्तन विद्यार्थी करें। यही विश्व-नागरिकत्व का मार्ग है। मैं उन्हें वैश्वानर बनने की सलाह देता हूँ। वे वैश्वानर बनने के बाद ही घर की, गाँव की, प्रान्त की और देश की सेवा कर सकेंगे।

राजनीति बहुत ही नगण्य चीज है। जिस समाज में राजनीति को आवश्यकता से अधिक महत्त्व मिल जाता है, वह समाज उन्नति नहीं कर सकता, यह मेरी निश्चित मान्यता है। अरे भाई, समाज में महत्त्व पाने के लिए कला है, संस्कृति है, साहित्य है—इन सबको छोड़कर आप राजनीति को महत्त्व देते हैं? यह बुद्धि का विपर्यास है। जिस समाज में राजनीति के स्थान पर इन दूसरी महत्त्वपूर्ण चीजों की ओर ध्यान दिया जाता है, उस समाज का विकास होता है। इसलिए विद्यार्थी राजनीति में पड़ें, यह सवाल ही नहीं उठना चाहिए। जो व्यापक दृष्टि रखेगा, वही सही रास्ते पर आगे बढ़ सकेगा।

छोटा काम : बड़ा दिमाग

विज्ञान-युग में छोटी दृष्टिवाला नहीं टिकेगा। प्लेटो का वर्णन 'फिलासाफिक किंग' के रूप में किया गया है। याने ऐसा राजा जो विश्व-व्यापक बुद्धि रखता है। जिस काम में छोटे दिमाग पड़ते हैं, उसमें अनेक तरह के झगड़े पैदा होते हैं। दिमाग याने बुद्धि बड़ी हो और काम छोटा हो तो उसे मूर्तिपूजा का स्वरूप मिल जाता है। छोटी-सी मूर्ति में भी विश्व-व्यापक भगवान का आरोपण किया जाता है। वैसे ही छोटे काम में बड़ा दिमाग होने से वह काम भी बड़ा बन जाता है। विश्व-व्यापक बुद्धि जहाँ हाथ में आयी, वहाँ छोटे लोग काम करेंगे, तो भी उनके हाथ से गलती नहीं होगी। फिर छोटे गाँव में भी विश्व की प्रतिमा बन सकेगी। घर को भी विश्व की प्रतिमा बना सकेंगे। यदि ऐसा न हुआ, काम को विश्व-व्यापक दृष्टि नहीं मिली, विशाल बुद्धि का अधिष्ठान न मिला तो सर्वत्र झगड़े-ही-झगड़े पैदा हो जायेंगे, समाज के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे और सारी शक्तियाँ इधर-उधर बिखर जायेंगी। फिर मेवाड़ के विरुद्ध मारवाड़, राजस्थान के विरुद्ध गुजरात, गुजरात के विरुद्ध महाराष्ट्र; पाकिस्तान के विरुद्ध हिन्दुस्तान, एशिया के विरुद्ध योरप, रशिया के विरुद्ध अमेरिका—इस तरह सब जगह टुकड़े-ही-टुकड़े पैदा हो जायेंगे और लोग लड़-झगड़कर खत्म हो जायेंगे।

हम पाँव से धरती पर चलते हैं, लेकिन दृष्टि कहाँ रहती है? वह तो अरबों मील दूर चली जाती है। इसी तरह हमारे काम में भी व्यापकता न रही तो हमारी गति क्षीण हो जायेगी, शक्तिहीन भी हो जायेगी। इसलिए मैं विद्यार्थियों से यह कह रहा हूँ कि वे व्यापक दृष्टि की साधना करें। क्योंकि उन्हें अपने जीवन में बहुत कुछ करना है। इसके साथ ही विद्यार्थियों को दूसरी सलाह यह भी देता हूँ कि वे शरीर-परिश्रम की आदत डालें। बिना परिश्रम किये, खाने की आदत का अधिकाधिक विस्तार होता जा रहा है। हर आदमी शरीर-श्रम से बचना चाहता है। क्योंकि उसे शिक्षण के साथ शरीर-श्रम का अभ्यास नहीं कराया जाता। इसी तरह विद्यार्थियों को दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचार चलते हैं, उनका ज्ञान भी पूरी तरह से हासिल करना चाहिए। सामूहिक रूप से अध्ययन करना चाहिए। मित्र-मंडल बनाकर ज्ञान-चर्चा करनी चाहिए। एकान्त में बैठकर स्वाध्याय करना चाहिए।

दृष्टि बड़ी हो

घर का प्रबन्ध, गाँव का प्रबन्ध, खेती का प्रबन्ध और उसकी आयोजना आदि समस्त प्रवृत्तियों में व्यापक दृष्टि रखनी होगी। यदि इन कामों में दृष्टि व्यापक रही तो सारी दुनिया एक की जा सकती है। यह विज्ञान का युग है। इस जमाने में छोटे-छोटे मसले भी देखते-देखते एकदम बड़े बन जाते हैं, अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ले लेते हैं। मिसाल के तौर पर गोवा का मसला। यदि यही मसला पुराने जमाने में पेश होता तो इतने दिनों में हल हो जाता। पानीपत की बड़ी भारी लड़ाई हुई थी। परन्तु उस जमाने में दुनिया को उसका पता ही नहीं चला। लेकिन आज गोवा का छोटा सा मसला भी अन्तर्राष्ट्रीय मसला बन गया है। ऐसी आज की हालत है। जापान, सुदूर पूर्व में है और अमेरिका सुदूर पश्चिम में। लेकिन जापान और अमेरिका पड़ोसी देश माने जाने लगे हैं। क्योंकि बीच में केवल आठ-दस हजार मील का एक छोटा-सा महासागर है, जो इन देशों को जोड़ता है। एक जमाने में जो सागर इन दोनों को तोड़ता था; अलग करता था,

वही आज उनको जोड़नेवाला बन गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि आज की दुनिया बहुत सीमित हो गयी है। इसीलिए किसी देश के किसी भी कोने में जरा भी हलचल मचती है तो कुल दुनिया में खबर पहुँचते देर नहीं लगती। परिणामस्वरूप छोटे से मसले का भी बहुत बड़ा फैलाव हो जाता है।

स्थितप्रज्ञ की अनिवार्यता

आज के जमाने में बिना स्थितप्रज्ञता के सवालों का हल नहीं किया जा सकेगा। क्योंकि पुराने जमाने में फैसला करने की जल्दी जरूरत नहीं थी। लेकिन आज चार बड़े राष्ट्र के लोगों को एक ही कमरे में बैठकर तुरन्त फैसला करना पड़ता है। इतना ही नहीं, एक राष्ट्र का प्रधान मन्त्री अपने कमरे में बैठा-बैठा टेलीफोन से लन्दन, मास्को, पेरिस आदि स्थानों से बातें करता है। कभी लन्दन से काल आता है तो कभी मास्को से। दो मिनट पेरिस से बात होती है तो तीन मिनट न्यूयार्क से। इस तरह सारी दुनिया से सम्बन्ध रखना पड़ता है। उसे सहस्र-कान बनना पड़ता है। फिर जवाब भी गोल-मोल नहीं दे सकता। गोल-मोल जवाब देने से गड़बड़ होने की सम्भावना रहती है। इसलिए तुरन्त निर्णय करके ठीक-ठीक जवाब देना पड़ता है। समस्या बड़ी और निर्णय शीघ्र—ये दोनों एक साथ होते हैं। इसलिए आज के जमाने में शासकों को स्थितप्रज्ञ बने बिना सफलता नहीं मिल सकती। पहले के जमाने से भी आज के जमाने में इस गुण की अधिक आवश्यकता है। जो स्थिर बुद्धिवाला मनुष्य होगा, वही तुरन्त और सही निर्णय कर सकेगा।

मैं भगवान से प्रार्थना किया करता हूँ कि हे भगवान! आईक साहब को और क्रुश्चेव साहब को सद्बुद्धि दो। यदि बड़ों के पास सद्बुद्धि होगी तो दुनिया का बचाव हो सकेगा। यदि उनमें दुर्बुद्धि पैदा होगी तो वे एक मिनट में ही दुनिया का विनाश कर डालेंगे। लोग कहते हैं कि भगवान से अपनी आत्मशुद्धि के लिए प्रार्थना क्यों नहीं करते? लेकिन वे यह नहीं समझते कि अगर मुझे दुर्बुद्धि पैदा होगी तो केवल मेरा ही नुकसान होगा। पर यदि इनको दुर्बुद्धि पैदा हुई तो सारी दुनिया को खतरा है।

गांधीजी ने हमें विकेन्द्रीकरण का महान मन्त्र दिया। उसका रहस्य मुझे दिनों-दिन ज्ञात होता जा रहा है। यह सत्ता का केन्द्रीकरण आज दुनिया के लिए भयानक खतरा साबित हो रहा है। आज शासकों के हाथ में जो शक्ति आयी है, वह बादशाह औरंगजेब के भी हाथ में नहीं थी। मराठी में कहावत है कि मियां बोलेगा तो केवल उसकी दाढ़ी हिलेगी और राजा बोलेगा तो उसकी सेना हलचल करेगी। पर आज के तथाकथित बादशाहों के कारण सारी दुनिया में ही हलचल पैदा हो जाती है। औरंगजेब यदि दक्षिण में किसी सरदार के पास अपनी आज्ञा भेजता तो उसका अमल करने में कम-से-कम चार-छह महीने तो बीत ही जाते। पर आज न्यूयार्क से हुक्म निकला है तो वह पाँच मिनट के अन्दर-अन्दर सब जगह पहुँच जाता है। उसका अमल भी शुरू हो जाता है। पाकिस्तान में मार्शल ला जाहिर किया गया तो उसका अमल करने में कितना समय लगा? कुछ भी नहीं। केवल अयूब के एक इशारे से सारी राजनैतिक पार्टियों को समाप्त कर दिया गया। उनके दफ्तरों को ताले लगा दिये गये। वहाँ के सारे दल समाप्त हो गये। और यहाँ मैं कितने दिनों से चिल्ला रहा हूँ कि पक्षमुक्त समाज होना चाहिए, पर अभी तक उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। अयूब की आज्ञा हुई तो उसका तुरन्त अमल भी हुआ। वहाँ पक्षमुक्त समाज बन गया। इतनी शक्ति आज चन्द लोगों के हाथ में आ गयी है। क्योंकि विज्ञान ने उस ओर प्रगति की। औरंगजेब के जमाने में विज्ञान नहीं था। उसके हाथ में सीमित ताकत थी। इसलिए उसकी आज्ञा का फौरन अमल नहीं हो सकता था। पर आज तो एक जिले के कलेक्टर के हाथ में भी औरंगजेब से ज्यादा शक्ति है।

विज्ञान में सत्ता का महत्त्व

आज प्रजा का भला करने के खयाल से कल्याण-राज्य चलता है। किन्तु जनता यह समझ ले कि यह कल्याण-राज्य की कल्पना बहुत ही भयानक कल्पना है। इस कल्याण-राज्य के नाम से सारी सत्ता चन्द लोगों के हाथ में केंद्रित करने का नाटक खेला जा रहा है। तालीम कैसी हो, व्यापार कैसा हो, उद्योग कौन से चलें, खेती में सुधार किया जाय, शादी के कानून बनाये जायँ—इत्यादि जन-जीवन की समस्त क्रियाओं पर सरकार हावी हो जाती है। 'कर्तुमकर्तुं अन्यथा कर्तुं शक्यः।' यह भगवान का वर्णन आज के सत्ताधीशों पर लागू होता है। साथ ही सरकार के माध्यम से जो काम होगा, वह श्रेष्ठतम नहीं हो सकता। जैसे डेअरी का दूध उत्तम भी नहीं होता और खराब भी नहीं होता, दोनों प्रकार की गायों के दूध का मिश्रण रहता है, वैसे ही इन जन-प्रतिनिधियों की बुद्धि भी औसत बुद्धि होती है। श्रेष्ठ नहीं। कुछ अच्छे लोग भी शासन में होते हैं और कुछ बुरे भी। सूरदास ने कहा है, "मूरख मूरख राजा कीन्हे, पंडित फिरत भिखारी।" हमारे समाज में यह माना जाता था कि दंड का अधिकार ज्ञानी के हाथ में रहना चाहिए।

आज के जमाने में दंड पुलिस के हाथ में रहता है। पुलिस की योग्यता उसके ज्ञान से नहीं, बल्कि उसकी बत्तीस इन्च की छाती देखकर तय की जाती है। पुलिसवालों को कोई अक्ल नहीं होती कि कौन आदमी कैसा है। वे कानून के अन्धे होते हैं। जैसे तैसे आदमी को गलत ढंग से दंड देते हैं। ऐसी स्थिति में देश का कैसे भला होगा? हम चाहते हैं कि देश का नेतृत्व ज्ञानी लोगों के हाथ में हो। पुलिस के बल पर या फौज के बल पर जो शासन करते हैं, वे शासक होने के लिए सर्वथा अयोग्य और निकम्मे लोग हैं।

नेतृत्व स्थितप्रज्ञ शिक्षकों के हाथ में हो

ज्ञानी और स्थितप्रज्ञ नेताओं की अपेक्षा शिक्षक-समाज से की जा सकती है। हिन्दुस्तान के जो सर्वोत्तम नेता थे, वे सारे आचार्य थे। शंकराचार्य, रामानुज, मध्व इत्यादि विद्वानों ने देश को बनाया। इसी तरह मैं आशा करता हूँ कि हमारे शिक्षक राजनैतिक पचड़े से अलग रहकर व्यापक चिन्तन करेंगे, तटस्थ दृष्टि रखेंगे और स्थितप्रज्ञ होकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। मेरा निश्चित मानना है कि बिना पक्षमुक्त समाज के राष्ट्र की तरक्की नहीं होगी। पार्टी-पालिटिक्स ने समाज की हालत को डाँवाडोल बना दिया है। सामाजिक स्थैर्य नष्ट हो गया है।

जिन लोगों ने आज तक राजनीति के प्रगतिशील विचार दुनिया को दिये, उनकी हालत इस पार्टी-पालिटिक्स के कारण क्या हुई, यह हमारे सामने है। फ्रान्स जैसा देश जिसने सारी दुनिया को समाजवाद का संदेश दिया, थोरो जैसे बड़े चिन्तकों को पैदा किया, उसकी आज सारी व्यवस्था मिलीटरी के हाथ में है। यह इस बात का प्रमाण है कि जब तक हम इन छोटे-छोटे झगड़ों से ऊपर नहीं उठेंगे, तब तक तरक्की नहीं होगी। इसलिए एक ऐसी जमात का होना नितान्त आवश्यक है, जो कि पक्षमुक्त रहकर सारे विश्व की सेवा करे।

विद्यार्थियों के छोटे-छोटे अध्ययन-मंडलों में इस विषय पर चर्चाएँ होनी चाहिए। अच्छे विचार जीवन में कैसे ला सकते हैं? इस पर सोचिये और अमल कीजिए। शरीर-श्रम भी हमें करना चाहिए। कुल दुनिया का आधार शरीर-श्रम है। उससे हम अलग रहेंगे तो ज्ञान नहीं होगा। व्यापक चिन्तन भी नहीं हो सकेगा। जो चीज स्कूली जीवन में नहीं मिल सकती, उसकी पूर्ति आप द्वारा की जा सकती है।

◆◆◆

स्वागत-समारोह में

बालाचारे (पंजाब) ७-५-'५९

भारतीय संस्कृति ने दुनिया को ब्रह्मचर्य का सबक सिखाया है

आज जहाँ हम ठहरे हुए हैं, वहाँ दिवाल पर एक वाक्य लिखा हुआ है—'ब्रह्मचर्य का पालन करो'। हमारे लिए यह वाक्य बहुत महत्त्व का है।

ब्रह्मचर्य एक महान शक्ति है

मैंने बचपन ही से अपने जीवन का आधार ब्रह्मचर्य पर ही रखा है। ब्रह्मचर्य पालने के लिए मेरी पूरी कोशिश रही है और उससे मैंने बहुत बल भी पाया है। मैं मानता हूँ कि ब्रह्मचर्य-पालन का जितना अभ्यास होगा, उतना ही समाज का विकास होगा।

इस युग में स्वामी दयानंद और विवेकानंद ने ब्रह्मचर्य को बहुत ही उत्तेजन दिया है। यद्यपि गांधीजी गृहस्थाश्रमी थे, फिर भी उन्होंने बाद में ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया। वे जीवन के आखिरी समय तक उस व्रत का पालन करते रहे और हम जैसे बालकों से उसका अभ्यास भी कराते रहे। मैंने पचासों ऐसे व्यक्ति देखे हैं, जो गृहस्थाश्रमी होते हुए भी गांधीजी की प्रेरणा से ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। पहले बाल-ब्रह्मचारी, संन्यासी या वानप्रस्थ ब्रह्मचर्य का पालन करते थे, परन्तु गांधीजी की यह खास देन है कि गृहस्थाश्रमी भी इस दिशा में अग्रसर हो सके।

मुझे बचपन में भगवान शंकराचार्य तथा शिवाजी महाराज के गुरु श्री स्वामी रामदास से ब्रह्मचर्य की प्रेरणा मिली। फिर स्वामी दयानंद और विवेकानंद की मिसालें भी सामने आयीं। इससे मैं उत्तरोत्तर अपनी निष्ठाओं को संजोता रहा। ब्रह्मचर्य में कितना आनंद है, कितनी शक्ति है तथा बुद्धि एवं प्रज्ञा के लिए यह कितना आवश्यक है, इस बात का मैंने अनुभव किया है। मुझे यह कहने में प्रसन्नता होती है कि मेरे इर्द-गिर्द भी कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने ब्रह्मचर्य पालन करने का अभ्यास किया है। ब्रह्मचर्य का उत्तम पालन करने की कोशिश करनेवाले कुछ लोग भूदान तथा दूसरे रचनात्मक कार्यों में संलग्न हैं।

ब्रह्मचर्य याने ब्रह्म में लीन होना

ब्रह्मचर्य की साधना अपने देश की खास चीज है। पश्चिमी मुल्कों से हमें विज्ञान जैसी कुछ चीजें जरूर सीखनी हैं, किन्तु ब्रह्मचर्य जैसी बातों के लिए हमारा देश उनसे बहुत आगे है। इस जमाने के महापुरुषों के जीवन में तो ब्रह्मचर्य का दर्शन होता ही है, पुराने शास्त्रों में भी इसे सर्वोपरि स्थान मिला है। वेद, उपनिषद्, गीता, योगसूत्र, ब्रह्मसूत्र, संतों के वचन एवं गुरुवाणी में ब्रह्मचर्य का उल्लेख है। गुरुवाणी में 'जतुपाहारा' शब्द आता है। जतु याने अपने ऊपर जब्त रखनेवाला। इसी को ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचर्य की बराबरी करनेवाला शब्द या उसका ठीक-ठीक तर्जुमा दूसरी किसी भाषा में उपलब्ध नहीं है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ सिर्फ विषय-वासना से अलग रहना ही नहीं, अपितु ब्रह्म में लीन हो जाना है। ब्रह्मप्राप्ति ही परम ध्येय है। उसके वास्ते वाणी, कृति तथा चित्त पर संयम करना है। उस उदात्त ध्येय की प्राप्ति के लिए संचित समग्र शक्तियों का सदुपयोग किये बिना नहीं चल सकता। एक बाजू से ब्रह्म के परम ध्येय का चिन्तन और दूसरी बाजू से उसकी साधना—जिसे अभ्यास और वैराग्य कहा जाता है, करनी होती है।

साम्यसूत्रों में पहला सूत्र है 'अभिधेयं परमसाम्यम्'। अपने इस ध्येय का निरन्तर चिन्तन और अनुशीलन करने को अभ्यास कहते हैं। इस अभ्यास में गतिरोध उत्पन्न करनेवाले जो अंतराय-रूप विषय हैं, उनसे अलग रहना ही वैराग्य है। इस प्रकार एक ओर तो ब्रह्मचर्य धनात्मक (Positive) विचार है और दूसरी ओर ऋणात्मक (Negative) विचार है। अभ्यास धनात्मक विचार है और वैराग्य ऋणात्मक! दोनों मिलकर ब्रह्मचर्य होता है।

ब्रह्मचर्य में ब्रह्म शब्द के जरिये हमारे सामने एक विशाल ध्येय रखा गया है। कोई उदात्त ध्येय सामने न हो तो ब्रह्मचर्य की साधना नहीं हो सकती। ब्रह्म-भावना से इन्द्रिय-संयम सुलभ होता है।

ब्रह्म बदलता है

ब्रह्म बदलता है। जमाने के अनुसार ब्रह्म का नित-नया स्वरूप सामने आता है। वेदों में कहा गया है 'अचिन्त्यं ब्रह्म जुजुषुः युवानः' जवान लोग उस ब्रह्म को पसन्द करते हैं, जिसका चिन्तन कभी किसीने न किया हो। पुराना खादी का विचार अच्छा था। लेकिन आज के लोग उसी सन्दर्भ में उसे पसन्द नहीं करते। हम आगे बढ़ आये हैं। हमारे सामने नये ब्रह्म के रूप में ग्राम-स्वराज्य के लिए खादी का विचार आया है। पुराने जमाने का ब्रह्म मजदूरों को अच्छी मजदूरी देना था। लेकिन इस जमाने का ब्रह्म मालकियत मिटाना तथा परम साम्य की स्थापना करना है। नये ब्रह्म ने कई लोगों को ब्रह्मचर्य की प्रेरणा दी है। मैंने किसी को उपदेश नहीं दिया, लेकिन भूदान-आन्दोलन की सफलता के लिए अनेकों लोगों ने जीवन समर्पण करने की प्रेरणा पायी है।

ब्रह्मचर्य : आज की आवश्यकता

पहले मनुष्य-संख्या कम थी, जमीन थी ज्यादा। इसलिए ब्रह्मचर्य के लिए तात्कालिक प्रेरणा नहीं थी। आज जमीन कम है, जनसंख्या ज्यादा है। इसलिए ब्रह्मचर्य एक सामाजिक आकर्षण बन गया है। मनुष्य में वात्सल्य-भाव बढ़ना चाहिए। इसके लिए यह जरूरी नहीं है कि अपने निज के शरीर से उत्पन्न बच्चे ही हों। आज ऐसे अनेकों बच्चे हैं, जिन की यथेष्ट सेवा नहीं होती। उनकी सेवा के लिए स्वयं प्रेरणा उत्पन्न होनी चाहिए। उसके लिए भी अध्ययन करना होगा। अनुकूल वातावरण का निर्माण करना होगा।

धर्मवाले असलियत पहचानें

आजकल गन्दे सिनेमा चलते हैं। उससे नागरिक जीवन अमर्यादित हो रहा है। सरकार का उस तरफ कोई ध्यान नहीं है। मुझे ताज्जुब होता है कि आज के ये तथाकथित धर्मवाले उसके खिलाफ आवाज क्यों नहीं उठाते? केवल मूर्तिपूजा से

धर्म का समाधान नहीं हो सकता। धर्म का समाधान तब होगा, जब असत्प्रवृत्तियाँ रुकेंगी। दुष्प्रवृत्तियों को उत्तेजित करनेवाले कार्यक्रम बन्द होंगे। भूदान जैसे धर्म-कार्य में जो कि सिनेमा रोकने का प्रयास करता है, राजनैतिक पक्षवाले तो फिर भी दिलचस्पी ले रहे हैं, लेकिन धर्मवालों को कोई दिलचस्पी नहीं है। इसका अर्थ ही यह है कि लोग धर्म की असलियत नहीं पहचानते। हर चीज का असली हार्द समझना आवश्यक होता है।

स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि किसीको अध्यात्म से प्रेम है तो वह संस्कृत सीखे। संस्कृत में ब्रह्मविद्या का बृहद् भण्डार है। वेद, उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र आदि अनेकों ग्रन्थ संस्कृत में हैं। इन दिनों कालेजों में संस्कृत पढ़ाई जाती है। इसमें जो शृंगारिक साहित्य है, वही पढाया जाता है। असद्ग्रन्थों के अध्ययन से ब्रह्मचर्य को उत्तेजना नहीं मिलती। लड़के अपने कर्तव्याकर्तव्य को नहीं समझते। इसलिए सद्ग्रन्थों के अध्ययन की योजना करना धार्मिक लोक अपना कर्तव्य मानें। सन्तवाणी, गुरुवाणी आदि जितने ग्रन्थ हैं, वे बहुत ही उपयोगी हैं। उनके अध्ययन की योजना होनी चाहिए।

पुरुषार्थ बढ़े

बच्चे गन्दा साहित्य पढ़ते हैं और गन्दे सिनेमा देखते हैं, इसलिए आज अल्पायु में ही वीर्यहीन हो रहे हैं। इससे उनमें अहिंसा की ताकत तो आयेगी ही नहीं, लेकिन हिंसा की ताकत भी नहीं आयेगी। वे आगे जाकर क्या पुरुषार्थ कर सकेंगे? आजकल यह एक आम शिकायत है कि हमारे यहाँ जन-संख्या बढ़ रही है। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि जन-संख्या बढ़ने से किसी भी राष्ट्र का भार नहीं बढता। राष्ट्र को जनसंख्या का भार तो तब मालूम पड़ता है, जब नागरिकों में पुरुषार्थ का अभाव रहता है। हम चाहते हैं कि हमारे यहाँ पुरुषार्थ बढे। सभी प्रज्ञावान, विद्वान और ब्रह्मनिष्ठ बनें। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन महादपुर (पंजाब) ८-५-'५९

गाँववाले यह समझें कि गाँव ही राज्य है और इसे हमें चलाना है!

जनता के जितने भी काम हैं, वे सारे काम जनता को ही कर लेने चाहिए। जनता अपना काम खुद नहीं करेगी तो फिर कोई काम ही नहीं हो सकेगा।

भूदान का काम आपसे होगा

सरकार ने खेती का महकमा खोला है। लेकिन अपने यहाँ अभी जो खेती होती है, क्या वह सरकारी महकमे से होती है? नहीं। गाँव-गाँव के किसान खेती करते हैं, इसीलिए अन्न उपलब्ध हो जाता है। सरकार का खेती का महकमा कुछ प्रयोग कर सकता है, वह प्रयोग करे और अपने तजुरबे से लोगों को परिचित करे। परन्तु मूल में खेती का काम तो जनता को ही करना है। इसी तरह भूदान-ग्रामदान का काम भी भूदानवाले करलेवाले नहीं हैं, वह तो आप ही को करना है। किसी व्यक्ति का अगर यह ख्याल हो कि भूदान-कार्यकर्ता जमीन प्राप्त करेंगे, बँटवारा करेंगे और फिर निर्माण का कार्य करेंगे तो वह ख्याल गलत है।

गाँव की ताकत बनायें

आज गाँवों में तीन तरह के लोग हैं। कुछ भूमिहीन हैं, कुछ कम जमीनवाले हैं और कुछ ज्यादा जमीनवाले हैं। तीनों तरह के लोगों को मिलकर गाँव की ताकत बनानी है। एक सुखी है और दूसरा दुःखी है, इस पर भी अगर वे काम नहीं आये तो गाँव में सुख से नहीं रह सकेंगे। गाँव एक परिवार है। पूरे गाँव का सुख अपना सुख है और पूरे गाँव का दुःख अपना दुःख है। भूमिहीनों की परेशानी भूमिवानों या कम भूमिवानों की परेशानी है और उन दोनों की परेशानी भूमिहीनों की परेशानी है—यह बात जिस दिन गाँववालों के ध्यान में आ जायगी, उसी दिन हमारा काम सफल हो जायगा। फिर लोग अपने-आप सोचने लगेंगे कि अपने गाँव की तरक्की कैसे होगी? गाँव का दुःख कैसे मिटेगा? जितनी जमीन गाँववालों के पास है, उतनी सबके लिए पर्याप्त नहीं है तो कौन से ग्रामोद्योग खड़े करने होंगे? बेकारों को क्या क्या काम दिया सकेगा? जैसे-जैसे इन प्रश्नों का हल निकाला जायगा, वैसे-वैसे विदेशी वस्तुओं का स्वतः बहिष्कार होता जायगा।

मान लो, हमने एक जिले के लिए एक निवेदक रखा। क्या उससे यह सारा काम हो सकेगा? यह काम तो होगा या नहीं, पर अगर वह गलत आदमी हुआ तो सारा काम बिगाड़ देगा। बिगाड़ने की शक्ति उसके पास रहेगी, बनाने की नहीं। बनाने का काम केवल गाँववाले ही कर सकते हैं।

ऐसे स्कूल से क्या लाभ?

जमीन का बँटवारा, ग्रामोद्योग आदि कार्यों के साथ गाँववालों को तालीम का काम भी अपने ही हाथों में लेना होगा। आज जो स्कूल चल रहे हैं, उनमें आप अपने लड़कों को भेजेंगे तो वे नास्तिक हो जायेंगे। चालू तालीम में अखलाकी चीज नहीं है कि जिससे बच्चों का दिल सुधरे। वहाँ लड़कों को न शरीर-श्रम सिखाया जाता है और न दस्तकारी की कला ही सिखाई जाती है। शरीर-श्रम करने में असमर्थ, दस्तकारी से अनजान अखलाकी चीज से अपरिचित, गीता, गुरुग्रंथ तथा कुरान आदि शास्त्रीय ज्ञान से दूर, गाँवों को छोड़कर शहरों की ओर भागने की इच्छा रखनेवाले लड़के जिस स्कूल से निकलेंगे, उससे गाँव को क्या लाभ होगा? तालीम का काम आप उठाइये, अपनी एक योजना बनाइये और बच्चों को ऐसा बनाइये, जिससे वे सभ्य, शिष्ट, संयमशील और जिम्मेवार नागरिक बन सकें। ◆

अनुक्रम

१. विश्वास की शक्ति के बिना न व्यक्ति टिकेगा,.... बलाचारे ७ मई '५९ पृष्ठ ४२१
२. लोकतन्त्र की सफलता के लिए पक्षमुक्त.... पटियाला २५ अप्रैल '५९ „ ४२२
३. मन से ऊपर उठकर विश्व-मानुष बनने.... जुरू २२ मार्च '५९ „ ४२४
४. भारतीय संस्कृति ने दुनिया को ब्रह्मचर्य का.... बालाचारे ७ मई '५९ „ ४२७
५. गाँववाले यह समझें कि गाँव ही राज्य है.... महादपुर ८ मई '५९ „ ४२८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।